राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति–चित्रों का एक भौगोलिक अध्ययन

A GEOGRAPHICAL STUDY OF WALL-PAINTING IN SHEKHAWATI REGION OF RAJASTHAN

Research Proposal (Synopsis)

Submitted to

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Submitted By

VIKRAM SONI

Research Scholar

Department of Geography

Under the Supervision of

Dr. Ajay Kumar Sharma

Department of Geography

SAMRAT PRITHIVEERAJ CHOUHAN GOVT. COLLEGE, AJMER

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति–चित्रों का एक भौगोलिक अध्ययन

प्राचीन काल से ही मानव ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कला का सहारा लिया है। विश्व के कई क्षेत्रों में भित्ति–चित्रों के उदाहरण प्राप्त हुए हैं। प्रारम्भ में यह कला अविकसित थी। आदिमानव ने गुफाओं की दीवारों पर विभिन्न प्रकार की रेखाओं को खींचकर अपने मन के भावों को व्यक्त किया। स्पेन, फ्रांस, दक्षिणी रोडेशिया, पेरु, अलास्का तथा भारत आदि विविध देशों में आदिम युग की ऐसी चित्रित गुफाएँ प्राप्त हुई है।

भारत में मिर्जापुर, मानिकपुर, होशंगाबाद, रायगढ, पंचमढी, भोपाल, रायसेन, ग्वालियर आदि क्षेत्रों की गुफाओं की भित्तियों पर ऐसे चित्र देखे जा सकते हैं। इस समृद्ध भित्ति चित्रकला की परम्परा का रुप अजन्ता, एलोरा, बाघ एवं एलीफेण्टा जैसी गुफाओं मे उपलब्ध है। पुराणों में भी चित्रकला को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है एवं इसकी महत्ता बताई गई है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला सम्बन्धी एक पूरा अध्याय है, जिसका नाम 'चित्रसूत्र' है। इस अध्याय में चित्रकला का महत्व इन शब्दों में बताया गया है–

कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम् ।
मांगल्यं प्रथमं दोतद् गृहे यत्र प्रतिष्ठतम् ।। 38।।

अर्थात् सभी कलाओं में चित्रकला उत्तम है, चित्रकला की साधना में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। अतः जिस घर में चित्रों की प्रतिष्ठा अधिक रहती है, वहाँ सदा मंगल की उपस्थिति मानी गई है।

कालीदास की रचनाओं में चित्रण के अनेक उदाहरण मिलते हैं। मेघदूत में यक्ष द्वारा अपनी स्त्री का चित्र बनाने का उल्लेख एवं भवनों में विविध रंगीन चित्र प्रसाधनों की चर्चा आती है। पार्वती द्वारा शंकर का चित्र बनाने का वर्णन कुमारसम्भव में है।

वात्स्यायन ने अपने ग्रन्थ कामसूत्र में भी चित्रकला की गणना 64 कलाओं में की है। कामसूत्र के टीकाकार यशोधर ने भी चित्रकला के 6 अंगों का उल्लेख किया है।

14 वीं शती के पश्चात् कागज का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। भित्ति–चित्रों की अपेक्षा कागज पर चित्रण कार्य सुगमता से होता था। अतः के 15 वीं शती तक भित्ति–चित्रों का स्थान कागज की पोथियों ने भी ग्रहण कर लिया। परन्तु कागज के अभाव, काष्ठ फलकों के छोटे व उनके शीघ्र नष्ट होने के कारण कालान्तर में दीवारों पर चित्रण होने लगा। शासकों व सेठों ने महलों, मन्दिरों, छतरियों एवं हवेलियों की सजावट हेतु भित्ति–चित्रों की परम्परा को आगे भी कायम रखा।

भारत में भित्ति–चित्रों के कई उदाहरण प्राप्त हुए है, परन्तु इस परम्परा को वर्तमान समय तक सुचारू रूप से जीवित रखने का श्रेय राजस्थान और उसके शेखावाटी प्रदेश को है। आरम्भ में यह प्रान्त भित्ति–चित्रण की दृष्टि से वीरान रूप में था परन्तु 1750 ई. से 1950 ई. तक के काल में यहाँ भित्ति–चित्रों का कलात्मक विकास हुआ। 1830 से 1900 तक का समय शेखावाटी भित्ति–चित्रकला का स्वर्णयुग माना जाता है।

राजस्थान के **शेखावाटी** क्षेत्र में भित्ति चित्रों का खजाना भरा पड़ा है यहाँ के छोटे–से–छोटे गाँव की हवेली में भी सुन्दर भित्ति चित्र मिलेंगें। शेखावाटी जयपुर राज्य की एक बड़ी व प्रमुख निजामत थी। यहाँ के सामन्तों का जयपुर राज्य और मुगल दरबार से अच्छा सम्बन्ध था जिस कारण इनका जीवन वैभवशाली था। इन्होंने गढ़, महल, मन्दिर, छतरियों आदि का निर्माण करवाया जिनमें कई भित्ति–चित्र बनाये गये। इनका अनुसरण करते हुए छोटे–छोटे सरदारों, ठाकुरों व धनी वैश्य वर्ग ने भी विशाल कलात्मक हवेलियों व देवालयों का निर्माण करवाया, जिनकी स्थापत्य कला प्रशंसनीय है। शेखावाटी के अधिकतर भित्ति–चित्र हवेलियों में है। इन भित्ति–चित्रों के निर्माण की परम्परा के मूल में धार्मिक विश्वास, मंगलमय भावना, वीर पूजा व स्वस्थ मनोरंजन की भावना रही है। इनमें भौगोलिक तथ्यों का समावेश पाया जाता है।

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों के विकास में कई प्रेरक तत्वों का योगदान रहा है। सामान्यतः सामन्त वर्ग तथा धनवान सेठ आश्रयदाता के रूप में चित्रकारों को प्रेरित करते रहे। चित्रकारों ने अपने इन आश्रयदाताओं की जीवन वृत्ति व उनकी छवि का अंकन भी अपने चित्रों में किया है। हिन्दु धर्म की संस्कृति, दर्शन, साहित्य व कला का प्रभाव इन भित्ति–चित्रों पर प्रमुख रूप से पड़ा है। इसके अलावा यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव भी इन भित्ति–चित्रों में देखा जा सकता है।

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों के विषयों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. धार्मिक विषयों के चित्र
2. श्रृंगारिक विषयों के चित्र
3. राजदरबार से सम्बन्धित चित्र
4. लोकजीवन से सम्बन्धित चित्र
5. पशु–पक्षी विषयक चित्र
6. वीर परिचायक चित्र
7. प्राकृतिक दृश्यों के चित्र

"Open Art Gallery" के नाम से देश–विदेश में प्रसिद्ध शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। भित्ति–चित्रों से युक्त इमारतें यहाँ के कई नगरों में देखी जा सकती है, जिनमें **झुंझुनू** में कल्याण जी का मन्दिर, गोपीनाथ जी मन्दिर एवं ईसर

दास मोदी की हवेली, कानीराम नृसिंहदास टीबरेवाल हवेली, **मण्डावा** में हनुमान प्रसाद गोयनका हवेली, सनेहराम लढिया हवेली, चोखानी हवेली, **नवलगढ** में गंगा माई मन्दिर, मोरारका अतिथि गृह, जीवराव जी की हवेली, मानसिंह हवेली, सरावगियों की हवेली, **फतेहपुर** में महावीर प्रसाद बियाला की हवेली, किशोरीलाल जालान हवेली, महावीर प्रसाद गोयनका हवेली, केडिया हवेली, नन्दलाल देवड़ा हवेली, **बिसाऊ** में नाथूराम पोद्दार हवेली, सेठ हिरालाल हवेली, जयदयाल केडिया हवेली, बनारसीलाल हवेली, **खेतड़ी** के दुर्ग में स्थित राज प्रासाद, **चूरू** में कन्हैयालाल बागला हवेली, **डूँडलोद** में रामचन्द्र गोयनका की हवेली व मन्दिर, **मुकुन्दगढ़** में केशरदेव जी कानोड़िया हवेली , गोपाल जी सोमानी हवेली, राजमहल, **रामगढ़** में रामगोपाल पौद्दार छतरी, शनिदेव मन्दिर, **चिड़ावा** में डालमिया की हवेली, दुलीचन्द जी की हवेली, पौद्दारों व सेकसरिया जी की हवेली, **सूरजगढ़** में सीता राम जी का मन्दिर, सूरजमल खेतान हवेली, **पिलानी** में डाढ़ाओ की हवेली, सरावगियो की हवेली, बिरला जी की हवेली, प्राचीन हनुमान मन्दिर, मण्डेलिया हवेली, **परसरामपुरा** में ठा. शार्दूल सिंह जी की छतरी, गोपीनाथ जी मन्दिर, **महनसर** में सोने–चांदी के कार्य से युक्त तुलाराम का कमरा, **सरदारशहर** में जम्मड़ भवन, प्राचीन शनीश्चर मन्दिर, **लक्ष्मणगढ़** में मुरली मनोहर मन्दिर, सीताराम जी लक्कड़ चौखानी परिवार हवेली, चिरंजीलाल बाजोरिया हवेली आदि प्रमुख है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शेखावाटी के कलात्मक भित्ति–चित्रों का भौगोलिक संदर्भ में शोध अध्ययन हेतु **"राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति–चित्रों का एक भौगोलिक अध्ययन"** विषय का चयन किया गया है।

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का काल विभाजन–

शेखावाटी प्रदेश का नाम राव शेखा के नाम से पड़ा है। इनका जन्म आमेर शासकों की कच्छवाह परम्परा में आसोज सुदी 10, वि. स. 1490 (ईस्वी सन् 1433) में हुआ। राव शेखा के पिता मोकलजी को शेख बुरहान ने प्रतापी पुत्र प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया। पुत्र प्राप्ति पर मोकलजी ने शेख बुरहान को सम्मान देने हेतू अपने पुत्र का नाम शेखा रखा। राव शेखा का शासन काल 1445 ई. से 1488 ई. तक रहा। यह क्षेत्र आमेर के कच्छवाह वंशीय राजाओं का ठिकाना था। यद्यपि आमेर व बैराठ में 16वीं शती से ही भित्ति–चित्रों का प्रभाव था, परन्तु शेखावाटी में इस काल में भित्ति–चित्रों का प्रचलन नहीं रहा। 18 वीं शताब्दी के मध्यकाल से कुछ महलों, मंदिरो, छतरियों व हवेलियों में भित्ति–चित्र उपलब्ध हुए है।

शेखावाटी क्षेत्र के सबसे प्राचीन भित्ति–चित्र 1740–1750 ई. के मध्य गोपीनाथ जी के मन्दिर (झुन्झुनू), ठाकुर शार्दुलसिंह जी की छतरी (परसरामपुरा) तथा कल्याणजी का मन्दिर (झुन्झुनू), मण्डावा का गढ़ आदि में उपलब्ध है।

शेखावाटी में भित्ति–चित्रों को निम्न चार कालों में विभक्त किया जा सकता है –

1. 18 वीं शती के मध्यकाल से 19 वीं शती के आरंभ तक
2. 19 वीं शती के आरंभ से 19 वीं शती के मध्यकाल तक
3. 19 वीं शती के मध्यकाल से 20 वीं शती के आरंभ तक
4. 20 वीं शती के आरंभ से वर्तमान काल तक

भारत के भित्ति–चित्रों के इतिहास का अवलोकन किया जाये तो यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक काल में भित्ति–चित्रों के निर्माण से पूर्व भित्ति पर एक विशेष प्रकार का चूना व मिट्टी मिश्रित पलस्तर लगाया जाता था, जिस पर चूने की पतली परत चढ़ाई जाती थी। इसके बाद रंगों का प्रयोग किया जाता था।

सामान्यतः भित्ति–चित्रों को पाश्चात्य शब्द **'फ्रेस्को'** से सम्बन्धित किया जाता रहा है। 'फ्रेस्को' शब्द इटली भाषा के 'फ्रेश' शब्द का रूपान्तर है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'ताजा पलस्तर' है।

भित्ति–चित्रण की निम्न विधियाँ प्रमुख है –

1. **फ्रेस्को**– इस विधि में गीले चूने के पलस्तर पर रंगों को चूने के पानी में घोलकर लगाया जाता है। ये भित्ति–चित्र पलस्तर की सतह से जज्ब होकर स्थायी हो जाते है।
2. **सेक्को**– इस विधि में सूखे पलस्तर पर चित्रकारी की जाती है। इसमें रंगों में गोंद व सरेस जैसे चिपचिपे पदार्थ का मिश्रण किया जाता है।
3. **राजस्थानी अरायश या आलागीला**– इसमें पलस्तर को बहुत चिकना किया जाता है, फिर ताजे व गीले पलस्तर पर रंगों को सिर्फ पानी में घोलकर लगाया जाता है।
4. **सामान्य विधि–** इस विधि में सामान्यतः कृत्रिम रंगों के द्वारा साधारण तरीके से दीवार पर चित्रण किया जाता है।

शेखावाटी के अधिकतर भित्ति–चित्रों में अरायश या आलागीला पद्धति का प्रयोग किया जाता है जो कि बहुत ही श्रमसाध्य है। इन चित्रों में मिट्टी व पत्थर के रंगो– रामरज, हिरमिच व गेरू (रेड ओकर) हरा भाटा (टेटावर्ट), नील (इंडिगो), काजल, कोयला, सिंदूर, हिंगुल आदि रंगों का प्रमुख रूप से प्रयोग हुआ है, कुछ जगहों पर जर्मनी से आयातित कृत्रिम रंगों का भी प्रयोग हुआ है। रंगों में अधिकतर नीला, कत्थई, लाल, हरा, पीला, काला व कुसूमल आदि का प्रयोग हुआ है।

भित्ति–चित्रों का महत्व

राजस्थान खनिज सम्पदा में धनी एवं विशाल भू–भाग का स्वामी होते हुए भी कई अभावों से ग्रस्त व आर्थिक विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ राज्य है। यहाँ कई भौगोलिक प्रतिकूलताओं एवं बाधाओं के कारण राज्य का तीव्र गति से आर्थिक विकास नहीं हो पाया

है, जिस कारण यह राज्य विकास की दौड़ में अन्य पड़ौसी राज्यों की तुलना में काफी पिछड़ गया है। आर्थिक विकास को गति देने के लिए यहाँ पर्यटन का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ पर्यटन की अनुकूल दशाएँ हैं। इस पर्यटन उद्योग के विकास में शेखावाटी के भित्ति–चित्रों से युक्त इमारतें अपना विशेष स्थान रखती है।

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का कलात्मक वैभव पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। इस क्षेत्र में 2012 से 2015 तक आने वाले पर्यटकों की संख्या इस प्रकार है–

वर्ष	शेखावाटी में पर्यटकों की कुल संख्या		
	स्वदेशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	योग
2012	1,96,942	42,860	2,39,802
2013	1,87,167	36,136	2,23,303
2014	2,43,089	46,828	2,89,917
2015	86,555	37,420	1,23,975

स्रोतः प्रगति प्रतिवेदन 2014–2015, पर्यटन विभाग, राजस्थान

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि यहाँ पर्यटन के विकास से रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। पर्यटन के विकास से इस क्षेत्र के आर्थिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है एवं अकाल व सूखे से होने वाली आर्थिक हानि की मार से भी बचा जा सकता है। इसके अलावा यहाँ की संस्कृति व कला का संरक्षण भी सुदृढ़ होगा।

भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से भी शेखावाटी के भित्ति–चित्र महत्वपूर्ण है। भूगोल की शाखाओं से सम्बन्धित कई तथ्यों की झलक इन भित्ति–चित्रों में देखी जा सकती है–

1. शेखावाटी के भित्ति–चित्रों को **भौतिक भूगोल** के अन्तर्गत **खगोल शास्त्र** (सूर्य, चन्द्रमा, सप्तऋषि आदि), **भूआकृति विज्ञान** (पर्वत, नदियाँ, भ्वाकृतियाँ आदि), **जलवायु विज्ञान** (बादल, वर्षा, ऋतु वर्णन, इन्द्रधनुष आदि), **समुद्र विज्ञान** (समुद्र, समुद्री मार्ग, समुद्री जीव आदि) और **जैव भूगोल** (वनस्पतियाँ, जीव जन्तु आदि) के तथ्यों से जोड़ा जा सकता है।

2. **मानव भूगोल** के सन्दर्भ में **सामाजिक–सांस्कृतिक भूगोल** (पहनावा, धर्म, रीति रिवाज, प्रथाएं, स्त्री दशा, लोकाचार, सामाजिक कुरीतियाँ आदि), **राजनीतिक भूगोल** (युद्ध के दृश्य), **आर्थिक भूगोल** (आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन प्रणाली, व्यापार आदि), **नृजातीय भूगोल** (जातियाँ, नायिका भेद, प्रवास आदि), **परिवहन भूगोल** (परिवहन साधन, मार्ग आदि), **कृषि भूगोल** (कृषि, फव्वारे, खेतों के आकार, पशुपालन आदि) और **अधिवास भूगोल** (भवन, तम्बू, अधिवास प्रतिरुप आदि) से सम्बन्धित प्रसंग भी यहाँ के भित्ति–चित्रों में परिलक्षित है।

भौगोलिक परिदृश्य–

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तर पूर्व में स्थित है। इस क्षेत्र के भित्ति–चित्रों के अन्तर्गत सीकर, झुन्झुनू एवं चूरू जिला शामिल है, जिसका अक्षांशीय विस्तार 27^{o} 30′ उत्तर से 29^{o} 00′ उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 73^{o} 51′ पूर्व से 76^{o} 06′ पूर्व के मध्य है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र लगभग 27528.43 वर्ग किलो मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके उत्तर में हनुमानगढ़ जिला, पश्चिम में बीकानेर, दक्षिण पश्चिम में नागौर, दक्षिण पूर्व में जयपुर तथा पूर्व में लुहारू (हरियाणा) है।

यह शुष्क–अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय प्रदेश है यहाँ कुछ संकेत मिले है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यह कभी टेथिस सागर का भाग था। यहाँ की स्थलाकृति उबड़–खाबड़ है। इसका दक्षिणी पूर्वी भाग रेतीली–दुमट मिट्टी व अरावली पहाड़ियों से घिरा है एवं पश्चिमी भाग में बालू के टीले परिलक्षित है। बालू के क्षेत्रों में पवनानुवर्ती बालूका स्तूपों का केन्द्रीकरण अधिक हैं। यह क्षेत्र मध्य पश्चिम में 400 मीटर तथा पूर्व में 600 मीटर तक ऊंचा हैं। अरावली के समीप कहीं–कहीं इसकी ऊँचाई 600 मीटर से भी अधिक हैं। यहाँ का सर्वोच्च शिखर रघुनाथगढ़ (1052 मी.) हैं।

यह क्षेत्र शुष्क–अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय क्षेत्र का भाग है। यहाँ औसत वर्षा 300 से 500 मिलीमीटर होती है। वर्षा के दिनों का औसत 27 से 30 दिन हैं। नवम्बर के मध्य से फरवरी अंत तक सर्दी रहती है, फिर जून तक ग्रीष्मकाल रहता है। शीत ऋतु में पारा 0^{o} से. से भी नीचे चला जाता है। गर्मी में 44^{o} से. से अधिक तक पारा पहुँच जाता है। सबसे ठण्डा व गर्म क्षेत्र चुरू है। गर्मी में औसत तापमान 26.8^{o} से. से 40.5^{o} से. तक तथा सर्दी में 10^{o} से. से 30^{o} से. तक रहता है।

यहाँ प्रमुख रूप से शुष्क अर्द्धशुष्क मरूस्थलीय वनस्पति पाई जाती है। खेजड़ी बबूल, जाल, झाड़ी, कंकेड़ा, कैर, फोग, कीकर, रोहिड़ा आदि कंटिली एवं आक, खींप, घतूरा, अडूसा, ऊँटकटाला, गोखरू, इन्द्रायण (तुम्बा), नीम, गिलोय, ग्वारपाठा आदि उपयोगी वनस्पति भी यहाँ होती है। इस प्रदेश में फतेहपुर व झुन्झुनू के बीड़ प्रसिद्ध हैं जो हजारों बीघा भूमि में फैले है।

यहाँ कोई बारहमासी नदी नहीं बहती है। केवल कांतली नदी है, जो कि वर्षा ऋतु में ही बहती है। यह खण्डेला पहाड़ी से निकलकर चूरू जिले में प्रवेश के साथ ही विलुप्त हो जाती है। इंदिरा गाँधी नहर द्वारा सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। चुरू में ताल छापर एवं सीकर में रैवासा व कोछोर नामक खारे पानी की झीलें है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार सीकर की कुल जनसंख्या 26,77,333, झुन्झुनू की 21,37,045 तथा चूरू की 20,39,547 है। तीनों जिले मिलकर राजस्थान की जनसंख्या का 9.99% भाग पूर्ण करते हैं।

खनिज संसाधन की दृष्टि से शेखावाटी प्रदेश प्राचीन काले से ही अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये रखता है। यहाँ के झुन्झुनू जिले में खेतड़ी की पर्वत श्रृंखलाएँ ताँबे के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ दो हजार वर्षों से ताम्र उद्योग चला आ रहा है। इसके अलावा शेखावाटी में स्फटीक, निकल, कोबाल्ट, फिटकरी, चीनी मिट्टी, इमारती पत्थर, कच्चा चूना पत्थर, जिप्सम आदि पाये जाते हैं।

शोध के उद्देश्य–

1. शेखावाटी में भित्ति चित्रों का भौगोलिक सन्दर्भ में अध्ययन करना एवं राजस्थान के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं कलात्मक विकास के सन्दर्भ में भित्ति–चित्रों के महत्व की विवेचना करना।
2. पुरातात्विक धरोहर के रूप में भित्ति चित्रों के महत्व का अध्ययन करना एवं राजस्थान के पर्यटन उद्योग के विकास में भित्ति–चित्रों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. शेखावाटी क्षेत्र को राजस्थान में पर्यटन के लिए आकर्षण के केन्द्र के रूप में प्रस्तुत करते हुये भित्ति चित्रों का भौगोलिक वर्णन करना।
4. भित्ति चित्रों के संरक्षण, संवर्द्धन एवं भावी विकास की संभावनाओं व योजनाओं का प्रारूप तैयार करना।

साहित्य पुनरावलोकन–

प्रस्तुत पुस्तक ''भारत की चित्रकला''– भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1996 में राय कृष्णदास ने बताया गया कि आदिम मनुष्य ने अपनी चित्रण की प्रवृत्ति को गुफाओं में चित्रांकन कर व्यक्त किया। इन गुफाओं में आज भी जानवरो, आखेट, आपस में युद्ध करते हुए मनुष्य एवं पूजनीय आकृत्तियों के भित्ति–चित्र उपलब्ध हैं। ऋगवेद में भी चमड़े पर बने अग्नि के चित्र का उल्लेख है। पाणिनि के समय (500 ई. पू.) में भी चित्रों का प्रर्याप्त प्रचार रहा। प्राचीन काल में तीन प्रकार के चित्र बनते थे–

(1) भित्ति–चित्र (दीवारों पर)
(2) चित्रपट (कपड़े या चमड़े पर)
(3) चित्रफलक (लकड़ी, मूल्यवान पत्थरों व हाथी दांत पर)

इस पुस्तक में राय कृष्णदास ने अजन्ता के चित्रण विधान व इनकी गुप्त शैली की विशेषताओं के बारे में उल्लेख किया है। मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित चालुक्य वंशीय सामेश्वर दत्त भूपति के 'मानसोल्लास' ग्रन्थ के तीसरे अध्याय के संदर्भ में बताया गया है कि भित्ति–चित्र बनाने के लिए दीवार का पलस्तर कैसा होना चाहिए व इसे कैसे बनाया जाना चाहिए। जमीन व रंगो के पकड़ के लिये काम में लिये जाने वाले सरेस को वज्रलेप कहा जाता था, जिसे भैंसे की ताजी खाल से बनाने की विधि का वर्णन है। इसके अलावा भिति चित्रों में सोने के उपयोग का विधान सर्वप्रथम इसी ग्रन्थ में वर्णित किया गया है।

राजस्थानी मुगल शैली व पहाड़ी शैली पर कश्मीर शैली का प्रभाव बताया गया है। रानी रूपमती और बाज बहादुर के वन विहार व शिकार के चित्रों की छवि की परम्परा व रागरागीनी के चित्रों का भी उल्लेख है। राजस्थानी शैली को अपभ्रंश शैली का नवीन उत्थान बताया गया है।

"भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एंव वराह अवतार, एक दिग्दर्शन" शोध प्रबन्ध, से हमें अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित पौराणिक साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इस शोध प्रबन्ध में मीनल शर्मा ने पुराणों को भारतीय संस्कृति का विशेष कोश एवं आधार बताया है। अवतारों की राजस्थानी शैली के भिति–चित्रो का वर्णन भी इस ग्रन्थ में है। शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में भी पौराणिक आख्यानों का वर्णन है। अतः यह ग्रन्थ पौराणिक भूगोल को समझने हेतु महत्वपूर्ण है।

"Tourism in Rajasthan" M. Phil. Dissertation, University Of Rajasthan, Jaipur, में एम. पी. बंसल के अनुसार राजस्थान में पर्यटन की अत्यधिक संभावनाएं है। यहां भव्य दुर्ग, हवेलियां व ऐतिहासिक इमारतें विद्यमान है। जो स्थापत्य कला के शिल्प सौन्दर्य से परिपूर्ण है। पर्यटन को बढावा देने से राजस्थान के आर्थिक विकास में यह सहायक हो सकता है। अतः इस शोध से राजस्थान एवं शेखावाटी के पर्यटन की आवश्यक जानकारी भी प्राप्त होगी। अतः इस हेतु यह लघु शोध सहायक होगा।

सुश्री श्वेता गुप्ता ने "राजस्थानी लघु चित्रों में रसिकप्रिया सौन्दर्यात्मक विवेचन" (डी. ई. आई. डीम्ड विश्वविद्यालय दयालबाग, आगरा), पी. एच. डी. (ड्रइंग एवं पेन्टिंग विभाग) 2013, शोध प्रबन्ध में बताया है कि मरूप्रदेश एक ऐसा सुन्दर व स्वच्छ दर्पण है, जिसमें पूरे देश की झाँकी प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती है। राजस्थानी शैली के विकास में राजस्थान की भौगोलिक रचना, प्राचीन इतिहास और मौलिक संस्कृति का प्रमुख हाथ रहा है। भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर राजस्थानी चित्रों की 4 शैलियों (मेवाड़ शैली, मारवाड़ शैली, हाड़ौती शैली एवं ढूंढार शैली) के बारे में बताया गया है।

लाजपतराय भल्ला की "राजस्थान का भूगोल" पुस्तक से हमें राजस्थान व शेखावाटी की जलवायु, भौगोलिक स्रोत, अपवाह, पर्यावरण, खनिज, प्राकृतिक वनस्पति, जनसंख्या, पर्यटन आदि की जानकारी प्राप्त होगी जो इस शोध में सहायक होगी।

हरफूलसिंह आर्य की पुस्तक "शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान" में भित्ति–चित्रों से युक्त इमारतों के निर्माण में राजस्थान की बहुमुखी ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और कला विषयक परम्पराओं का निरूपण किया गया हैं। इस पुस्तक से शेखावाटी के ऐतिहासिक स्वरूप की महत्वपुर्ण जानकारी प्राप्त होगी।

संजय भालोटिया ने "शेखावाटी में पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार" शोध ग्रन्थ में शेखावाटी के प्रमुख पर्यटक स्थलों का स्थानिक वर्णन किया हैं। शेखावाटी के इन पर्यटक स्थलों की प्रसिद्धि में भित्ति–चित्रों का विशेष प्रभाव बताया है। भित्ति–चित्रों के कलात्मक

सौन्दर्य के कारण यह क्षेत्र राजस्थान मे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत व विश्व में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। अतः अध्ययन की दृष्टि से यह ग्रन्थ उपयोगी है।

"Shekhawati Haveli Paintings : A Cultural Introduction" पुस्तक में आर. पी. एस. राठौड़ ने शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में वर्णित भगवान विष्णु के प्रमुख अवतारों के बारे में बताया है। इन भित्ति–चित्रों में तात्कालिक भौगोलिक स्वरूप की झलक दिखाई देती है। इसके अलावा पौराणिक प्रसंगों, युद्धों, लोक जीवन, राज दरबार, श्रृंगारीकता, तात्कालिक वनस्पतियों व प्रजातियों के बारे में बताया गया है, जिससे हमें भौगोलिक विकास के कालक्रम के बारे में समझ प्राप्त होती है।

प्रदीप श्रीवास्तव की पुस्तक "शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक इतिहास" में भित्ति–चित्रण की परम्परा की भूमिका को राजस्थान की लोक कला के रूप में वर्णित किया है। भित्ति–चित्रण के प्रेरक तत्वों, काल विभाजन, शेखावाटी के प्रमुख नगरों के भित्ति–चित्रों, भित्ति–चित्रण की विधियों, कलात्मक विवेचना, शेखावाटी शैली के विभिन्न विषयों का उल्लेख किया गया हैं। भारत में भित्ति–चित्रण की परम्परा के परिपेक्ष्य में शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का सिंहावलोकन किया गया है। जिसके अन्तर्गत प्रमुख भित्ति–चित्रों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। यह कृति शोध के लिए सहायक होगी। इस पुस्तक में शेखावाटी के चित्रों पर यहां की भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव की विवेचना की गई है।

Ilay Cooper ने अपने यात्रा वृत्तान्त "Rajasthan: Exploring Painted Shekhawati" में शेखावाटी के लोक जीवन व संस्कृति का वर्णन किया है। रामगढ–शेखावाटी से अपनी यात्रा आरम्भ कर शेखावाटी के विभिन्न नगरों से गुजरते हुए यहाँ के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के कई पहलुओं के बारे में बताया है। इस पुस्तक में मौजूद भित्ति–चित्रों से युक्त इमारतों के चित्रों में यहाँ के लोक–जीवन की सुन्दर व जीवन्त झाँकी देखी जा सकती है। शेखावाटी के इन भित्ति–चित्रों के भौगोलिक स्वरुप के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्ष के अध्ययन की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

"भित्ति–चित्रों की जाँच और संरक्षण" में ओ. पी. अग्रवाल एवं रश्मि पाठक ने भित्ति–चित्र सामग्री के बारे में विवरण दिया है। भिति–चित्रों के निर्माण की विधियाँ, उनकी जांच व संरक्षण की तकनीकों के बारे में बताया गया है। अतः भित्ति–चित्रों से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन, समाधान व संभावनाओं की दृष्टि से यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

शोध रिक्तता–

उपरोक्त साहित्य पुनरावलोकन में शेखावाटी क्षेत्र विशेष के संदर्भ में विश्व, भारत एवं राजस्थान के भित्ति–चित्रों के प्रारम्भ, विकास व वर्तमान स्वरुप से सम्बन्धित तथ्यों के बारे

में विवरण दिया गया है। इस विवरण में शेखावाटी के भित्ति–चित्रों की महत्ता बताते हुए इनकी शैलियों, स्वरुप, परम्परा, काल–क्रम, विवरण आदि का भी वर्णन किया गया है। शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में भौगोलिक तथ्यों से सम्बन्धित प्रसंग भी परिलक्षित हैं। भौगोलिक अध्ययन के सन्दर्भ में इन प्रसंगों की व्याख्या का उपरोक्त साहित्य में अभाव है। अतः इन भित्ति–चित्रों के भौगोलिक प्रसंगों के अध्ययन की दृष्टि से शोध कार्य किया जायेगा।

शोध का शीर्षक **"राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति–चित्रों का एक भौगोलिक अध्ययन"** है। इस शोध कार्य में समस्त शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का भौगोलिक अध्ययन किया जायेगा।

शोध की परिकल्पना–

शोध के लिए इस विषय का चयन इसलिए किया गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में विगत 1980 के दशक से महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में पर्यटन किसी भी राष्ट्र के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान के प्रमुख स्त्रोत के रूप में विकसित हो रहा है। शेखावाटी क्षेत्र सीमित क्षेत्र होते हुए भी विदेशी मुद्रा अर्जित करने एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार के साधन प्राप्ति का उद्योग बन गया है।

1. भूगोल के ऐतिहासिक, सामाजिक–सांस्कृतिक व धार्मिक स्वरूप को समझने के अवसर की प्राप्ति में सहायक है।
2. शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। पर्यटन की दृष्टि से यह क्षेत्र राजस्थान के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यहाँ के मन्दिरों, कुओं, किलो, बावड़ियों, महलों व हवेलियों में भित्ति–चित्रों का कलात्मक स्वरूप वैभवपूर्ण है।
3. राजस्थान में भित्ति–चित्रों से सम्बन्धित पर्यटन केन्द्रों के माध्यम से मुद्रा प्राप्ति का प्रमुख स्रोत विकसित हो रहा है। यहाँ के निवासियों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के कई अवसर प्राप्त हो रहे हैं।
4. अन्य सहायक उद्योगों, जैसे– होटल व्यवसाय, हैण्डी क्राफ्ट उद्योग, परिवहन संसाधनों आदि के विकास में भी आर्थिक उन्नति हेतु भित्ति–चित्रों का वितरण महत्वपूर्ण है।

शोध विधि तंत्र–

प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण उपागम विधि तंत्र को अपनाया गया है। भौगोलिक प्रसंगों की तुलनात्मक व्याख्या हेतु भौगोलिक साहित्य के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक साहित्य से जुड़ी हुई सूचनाएँ भी काम में ली गई है।

शोध के लिए सूचना का प्रमुख स्त्रोत राजस्थान पर्यटन विभाग, शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन कार्यालय, सूचना केन्द्र, सांख्यिकी विभाग, राजस्थान का इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें, पत्रिकाएँ, लेख, पर्यटन आलेख, इन्टरनेट, इस क्षेत्र से जुड़े व्यक्तिगत लोगों से सम्पर्क शेखावाटी के ग्रामीणों से सूचना आदि है।

प्रतिचयन विधि से आँकड़ों का संकलन व विश्लेषण एवं विश्वसनीय स्त्रोतों से आँकड़े लिये जायेगें।

प्राथमिक स्त्रोत का आधार– क्षेत्र भ्रमण कर सर्वेक्षण, पर्यटकों व स्थानीय लोगों से साक्षात्कार एवं प्रश्नावली द्वारा आँकडों की प्राप्ति करना।

गौण स्त्रोत का आधार– पुस्तकें, शोध–ग्रन्थ, समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, इन्टरनेट, फिल्में, टी. वी. धारावाहिक, राजस्थान पर्यटन विभाग, शेखावाटी क्षेत्र के सरकारी कार्यालयों से आँकड़े लेकर सांख्यिकी विधि से विश्लेषण।

अध्याय

1. प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1.1 समस्या की रुपरेखा
1.2 अध्ययन क्षेत्र का चयन
1.3 साहित्य का पुनरावलोकन
1.4 शोध का उद्देश्य
1.5 शोध परिकल्पना
1.6 शोध विधि तन्त्र एवं आँकड़ों का एकत्रीकरण
- **1.6.1** अध्ययन पद्धति
- **1.6.2** प्राथमिक तथ्य संकलन
- **1.6.3** द्वितीयक तथ्य संकलन
- **1.6.4** आँकड़ों के संकलन की तकनीक आदि।

2. द्वितीय अध्याय

शेखावाटी का परिचय

2.1 भौगोलिक स्वरुप
- **2.1.1** स्थिति एवं विस्तार
- **2.1.2** धरातलीय स्वरुप
- **2.1.3** अपवाह तंत्र
- **2.1.4** जलवायु
- **2.1.5** मिट्टियाँ
- **2.1.6** वनस्पति एवं जीव–जन्तु
- **2.1.7** खनिज संसाधन
- **2.1.8** मानव संसाधन

2.2 ऐतिहासिक स्वरुप
2.3 सामाजिक/सांस्कृतिक स्वरुप
2.4 धार्मिक स्वरुप
2.5 आर्थिक स्वरुप

3. तृतीय अध्याय

शेखावाटी के भित्ति चित्रों का महत्व

3.1 भित्ति–चित्रों का ऐतिहासिक विकास
3.2 भित्ति–चित्रों का भौगोलिक एवं आर्थिक महत्व
3.3 भित्ति–चित्रों का अन्य महत्व

4. चतुर्थ अध्याय

शेखावाटी के भित्ति चित्रों के प्रमुख क्षेत्र

4.1 झुँझुँनू के भित्ति–चित्र
- **4.1.1** झूँझूनू के भित्ति–चित्र
- **4.1.2** मण्डावा के भित्ति–चित्र
- **4.1.3** नवलगढ के भित्ति–चित्र
- **4.1.4** मुकुनगढ के भित्ति–चित्र
- **4.1.5** डूँडलोद के भित्ति–चित्र
- **4.1.6** परसरामपुरा के भित्ति–चित्र
- **4.1.7** चिड़ावा के भित्ति–चित्र
- **4.1.8** पिलानी के भित्ति–चित्र
- **4.1.9** सूरजगढ के भित्ति–चित्र
- **4.1.10** बिसाउ के भित्ति–चित्र
- **4.1.11** महनसर के भित्ति–चित्र
- **4.1.12** अलसीसर के भित्ति–चित्र
- **4.1.13** खेतड़ी के भित्ति–चित्र
- **4.1.14** अन्य भित्ति–चित्र

4.2 सीकर के भित्ति–चित्र
- **4.2.1** सीकर के भित्ति–चित्र
- **4.2.2** लक्ष्मणगढ के भित्ति–चित्र
- **4.2.3** फतेहपुर के भित्ति–चित्र
- **4.2.4** रामगढ के भित्ति–चित्र
- **4.2.5** अन्य भित्ति–चित्र

4.3 चूरु के भित्ति–चित्र
- **4.3.1** चूरु के भित्ति–चित्र
- **4.3.2** सरदारशहर के भित्ति–चित्र

4.3.3 रतनगढ के भित्ति–चित्र
4.3.4 रतननगर के भित्ति–चित्र
4.3.5 अन्य भित्ति–चित्र

5. पंचम अध्याय

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का स्वरुप

5.1 सामान्य परिचय (प्रकार, निर्माण सामग्री, उपकरण, चित्रकार, शैलियाँ आदि)
5.2 प्रमुख प्रसंग
5.3 कलात्मक पक्ष
5.4 भौगोलिक प्रसंग

6. षष्टम अध्याय

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों में भौगोलिक पक्ष

6.1 भौतिक भूगोल (खगोल शास्त्र, भूआकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, समुद्र विज्ञान, जैव भूगोल)
6.2 मानव भूगोल (ऐतिहासिक भूगोल, सामाजिक भूगोल, सांस्कृतिक भूगोल, राजनीतिक भूगोल, आर्थिक भूगोल, वाणिज्य भूगोल, परिवहन भूगोल, कृषि भूगोल, आवासीय भूगोल)

7. सप्तम अध्याय

शेखावाटी के भित्ति–चित्रों के विकास की संभावनाएँ व योजनाएँ

7.1 भित्ति–चित्रों के विकास की संभावनाएँ
7.2 भित्ति–चित्रों के विकास की योजनाएँ एवं संरक्षण

8. अष्टम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ–सूची

Agarwal, O. P., Wikramasinghe, Nand, Amara : Materials & Techniques Of Ancient Wall Painting Of Sri Lanka, Sundeep Prakashan, New Delhi, First Edition 2002

Barrtt, D. E & Basi Gray : Painting of India, Treasures of Asia Series, Skira, 1963

Brown, Percy : Indian Painting, Heritage of India Series, Calcutta, 1932

Bomford, David, Leonad, Mark : Issues In The Conservation Of Wall Painting, Gatty Publication, Los Angeles, 2004

Cather, Sharon : The Conservation Of Wall Painting, The Gatty Conservation Institute, First Edition, 1991

Charkarbarti, Jayanta : Techniques In Indian Mural Painting, (k .P Khgi & CO , Calcutta), 1980

Coomaraswamy, A. K. : The techniques and theory of Indian Painting, Technical Studies, III, 2, Combridge, Mass, 1934

Cooper, Ilay : Rajasthan: Exploring Painted Shekhawati, Niyogi Books, New Delhi, 2014

Chaitanya, Krishna : A history of Indian Painting the Mural Tradition, First published, 1976, K. K. Nair published by Shakti Malik Abhinav publication E37 Hauzkhas, New Delhi

Ghosh, A. : Ajanta Murals, Archaeological Survey Of India, New Delhi, 1967

Mora, Paolo, Mora, Laura, Philippot, Paul : Conservation Of Wall Painting, Butterworths London Boston, Durban, Singapore, Sydney Tronto, Wellington, 1984

Nayar, T. S. : Use of palnts and plant products in tradional Indian Mural painting, Econ Bot, January March, 1999, 42

Nagpal, J. C. : Mural painting in India, Mrs Gayatri Garg for Gian Publishing house, Delhi, 1988

Oddy, Andrew : The Art Of Conservator, Published By British Museum Press, 1992

Paramasivan, S. : An Investigation in to the Methods of the Mural Paintings, Jour. Ind, Soc. or. Art, VII, Calcutta, 1939

Rathore, R. P. S. : Shekhawati Haveli Paintings: A Cultural Introduction, Karni Publishers, Nawalgsrh, First Edition, 2010

Seth, Mira : Indian painting the Grate Mural Tradition, First Publishing in India in 2006. Main publishing Pvt Ltd, 31 Somnath Road, Usmanpura, Ahmedabad-3810013, India

Vogel, J. Ph. : The discovery of Frescoes, in south Indian Temples, Ann, 1931 Bib, Ind, Arch, for Leiden, 1932

हिन्दी संदर्भ ग्रंथ

अग्रवाल, ओ. पी., पाठक, रश्मि : भित्ति–चित्रों की जाँच और संरक्षण, संदीप प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002

अग्रवाल, श्यामबिहारी : भारतीय चित्रकला इतिहास (मध्यकालीन), रूपशिल्प प्रकाशन,
इलाहबाद, 1999

अग्रवाल, आर. ए. : मारवाड़ म्यूरल्स, दिल्ली, 1977

आर्य, हरफूलसिंह : शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1987

काला, सतीशचन्द्र : भारतीय चित्रकला, बैलवेडियर प्रेस, इलाहबाद, 1936

कौशिक.बरुआ, ऋषि जैमिनी : मैं अपने मारवाडी समाज को प्यार करता हूँ, जैमिनी प्रकाशन, कोलकाता, 1967

कृष्णदास, राय : भारत की चित्रकला, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1996

खंजाची, मोतीचन्द्र : बीकानेर की चित्रकला, राजस्थान भारती, भाग–5

गुप्ता, के. एस. एवं ओझा, जे. के. : राजस्थान का इतिहास– एक सर्वेक्षण (1100 ई0 से 1950 ई0 तक)

गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1990

घोष., ए. : अजन्ता का वैभव, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, प्रथम संस्करण 1916

चतुर्वेदी, गोपाल मधुकर : भारतीय चित्रकला : ऐतिहासिक संदर्भ, जागृति प्रकाशन, अलीगढ़, 1982

चौहान, सुरेन्द्र सिंह : राजस्थानी चित्रकला, राहुल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1994

द्विवेदी, प्रेमशंकर द्विवेदी, मनीष कुमार : भारतीय भित्ति–चित्रकला, कला प्रकाशन, न्यू साकेत कॉलोनी, वाराणसी, 2010

दास, रायकृष्ण : भारत की चित्रकला, भारती भंडार, प्रयाग, 1950

दिवाकर, बी. एम. : राजस्थान का इतिहास, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1972

नीरज, जयसिंह : राजस्थानी चित्रकला, राजस्थानी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1994

भल्ला, लाजपतराय : राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2014

मिश्र, रतनलाल : शेखावाटी का इतिहास, प्रकाशक– राजेन्द्र मिश्र, मण्डावा, 1984

वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1980

वर्मा, महेन्द्र : भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला का प्रकाशन, दिल्ली, 2006

वात्स्यायन : कामसूत्र, संपा– देवीदत्त शास्त्री, वाराणसी, 1999

विजयवर्गीय, रामगोपाल : राजस्थानी चित्रकला, विजयवर्गीय कला भवन, जयपुर, 1953

शर्मा, कालूराम : राजस्थान का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1904

शर्मा, शिव कुमार, श्रोत्रिय, शुकदेव : चित्रण विधान एवं सामग्री, छवि प्रकाशन, आदर्श नगर, भोपा रोड, मुजफ्फरनगर, प्रथम संस्करण 1988

श्रीवास्तव, प्रदीप : शेखावाटी के भित्ति–चित्रों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक इतिहास, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2011

हाल्दार, असितकुमार : भारतीय चित्रकला, चन्द्रलोक प्रकाशन, इलाहबाद, 1959

शोध ग्रंथ

Bansal, M. P. : Tourism in Rajasthan, Unpublished M. Phil. Dissertation, University Of Rajasthan, Jaipur, 1977

गुप्ता, श्वेता : राजस्थानी लघु चित्रों में रसिकप्रिया सौन्दर्यात्मक विवेचन, शोध प्रबन्ध, डी. ई. आई. डीम्ड विश्वविद्यालय दयालबाग, आगरा, 2013

बौरिया, लक्ष्मी : भित्ति–चित्रों का संरक्षण– एक अध्ययन, एम. फिल. लघु शोध प्रबन्ध, डी. ई. आई. डीम्ड विश्वविद्यालय दयालबाग, आगरा, 2013

भालोटिया, संजय : शेखावाटी में पर्यटन के पारिस्थितिकीय आधार, शोध प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2004

मिश्रा, मीनल : भारतीय चित्रकला में मत्स्य, कूर्म एंव वराह अवतार, एक दिग्दर्शन, शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, 2006

शुक्ला, अंशुली : कोट्टयम् के पारम्परिक भित्ति–चित्र सन्दर्भ– पुण्डारिकापुरम् विष्णु मन्दिर व पाण्डवाथ शास्ता मन्दिर, डी. ई. आई. डीम्ड विश्वविद्यालय दयालबाग, आगरा, 2013

स्वामी, हरीशचन्द्र : समसामयिक म्यूरल चित्रण व म्यूरल कलाकार श्री सुरेन्द्रपाल जोशी, एम. फिल. लघु शोध प्रबन्ध, म. द. स. विश्वविद्यालय, अजमेर, 2008

समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ

खंगारोत, समदर सिंह : शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति–चित्र, आकृति, भित्ति चित्र विशेषांक, अप्रैल–जून, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1995

जयसिंह 'नीरज' : शेखावाटी शैली, भित्ति–चित्र अंक, शेखावाटी बोध, जून, 2005

भारद्वाज, विनोद : मरुधरा का गौरव शेखावाटी, राजस्थान सुजस, 20 अक्टूबर, 2015

महरिया, भंवरलाल : मण्डावा की भित्ति–चित्र कला, भित्ति–चित्र अंक, शेखावाटी बोध, जून, 2005

मिश्र, रतनलाल : सरदारशहर के भित्ति–चित्र, भित्ति चित्र अंक, शेखावाटी बोध, जून, 2005

स्वामी, चेतन : फतेहपुर की चित्रांकित हवेलियाँ, भित्ति–चित्र अंक, शेखावाटी बोध, जून, 2005

स्वामी, चेतन : शेखावाटी का सांस्कृतिक वैभव, भित्ति–चित्र अंक, शेखावाटी बोध, जून, 2005

सैनी, विश्वनाथ : दिल के झरोखे सी हवेलियाँ, परिवार, राजस्थान पत्रिका, 30 अप्रेल, 2008

यादव, भगवान सहाय : हवेलियों की दुनिया, परिवार, राजस्थान पत्रिका, 30 अप्रेल, 2008

व्यास, हेतप्रकाश : आबाद हुई हवेलियाँ, रविवारीय, राजस्थान पत्रिका, 24 सितम्बर, 2006

वर्मा, नाथूलाल : राजस्थानी भित्ति–चित्रण की तकनीक, आकृति, भित्ति चित्र विशेषांक, अप्रैल–जून, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1995

इण्टरनेट–वेबसाइट

www.bharatdiscovery.org
www.cntraveller.in
www.dainiktribuneonline.com
www.ignca.nic.in
www.incredibleindiaphotogallery.com
www.jagranjosh.com
www.m.bhaskar.com
www.ramgarhshekhawati.com
www.shekhawati.in
www.shekhawatianchal.blogspot.in
www.wanderloot.wordpress